भी अच्छे स्रोत हैं। सब्जियों के अवशेष जैसे पत्तागोभी, फूल गोभी, मूली की पत्तियों, गाजर की पत्तियों आदि में प्रोटीन की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है अतः इन्हें भी अकाल के दौरान पशुओं को खिलाना लाभदायक होता है।

सूखे/वाढ़ में हरे चारे एवं दाने की कमी के कारण पशुओं की निर्भरता रेशेदार सूखे चारे पर अत्यधिक बढ़ जाती है।

इन सूखे चारे में पोषक तत्व अत्यन्त कम पाये जाते हैं जिनसे पशुओं का जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। सूखे चारे की पौष्टिकता बढ़ाने में यूरिया अहम भूमिका निभा रही है। इसके अतिरिक्त यूरिया–शीरा,यूरिया–शीरा खनिज तरल मिश्रण एवं यूरिया–शीरा खनिज ब्लॉक अकाल के दौरान महत्वपूर्ण हैं।

❖ **सूखे चारे को यूरिया घोल से उपचारित करनाः** इसमें सूखे चारे जैसे गेहूँ का भूसा, धान की पुआल, ज्वार, बाजरे की कुट्टी को यूरिया घोल से उपचारित किया जाता है ताकि इनकी पोषक गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

❖ **सूखे चारे को यूरिया मोलासेस के घोल से उपचारित करनाः** इस विधि में 100 किलोग्राम चारे को लगभग 3 मीटर के घेरे में फैला देते हैं। 3.5 किलो यूरिया को 10.5 किलो मोलासेस के साथ आधे घण्टे गर्म करके उसमें 40 लिटर पानी मिलाकर अच्छी तरह घोल बना देते हैं। इस घोल को फैलाये गये सूखे चारे पर छिड़क कर अच्छी तरह मिला लेते हैं एवं सूर्य के प्रकाश में सुखा लेते हैं। सुखाने के बाद चारे का ढेर बना लेते हैं और सुरक्षित स्थान पर रख देते हैं।

यूरिया उपचारित चारा पशुओं को किस तरह खिलांऐः–

✓ उपचारित चारे की ढेरी को एक तरफ से खोलें, आवश्यकतानुसार ही चारा बाहर निकालें एवं पुनः ढेरी को बंद कर दें ताकि अमोनिया गैस अन्दर ही रहे।

✓ खिलाने से पूर्व चारे को एक घंटा हवा में खुला छोड़ दें ताकि अमोनिया की तीव्र गंध कम हो जाए।

✓ यह उपचारित चारा किसी भी स्वस्थ पशु को जिसकी उम्र छः माह से अधिक हो, खिलाया जा सकता है।

✓ उपचारित चारे के साथ 20 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दें।

निष्कर्षः–सूखे या बाढ़ जैसी आपदाओं में पशुओं की सुरक्षा हेतु उचित प्रबंधन आवश्यक है। सूखे में चारे व पानी की कमी से बचाव के लिए चारा भंडारण, वैकल्पिक चारे का उपयोग और स्वच्छ जल उपलब्ध कराना चाहिए। कमजोर पशुओं को अलग रखकर खनिज मिश्रण व पूरक आहार दें। बाढ़ की स्थिति में पशुओं को ऊँचे स्थान पर ले जाएँ, सूखा चारा सुरक्षित रखें और स्वच्छ पानी उपलब्ध कराएँ। संक्रमण रोकने हेतु टीकाकरण, कीट नियंत्रण व सफाई पर ध्यान दें। समय पर राहत योजनाओं का लाभ लेकर पशुओं का जीवन व उत्पादकता को सुरक्षित रखा जा सकती है।

संपादकः

निर्मल सिंह दहिया, निदेशक प्रसार शिक्षा

योगेन्द्र सिंह जादौन, उप–निदेशक, प्रसार शिक्षा

दीप नारायण सिंह, विभागाध्यक्ष, पशुधन प्रक्षेत्र परिसर

प्रकाशकः

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

Folder : PN/71/2026/DEE/BASU-Patna

सूखे अथवा बाढ़ की स्थिति में पशुओं का प्रबन्धन

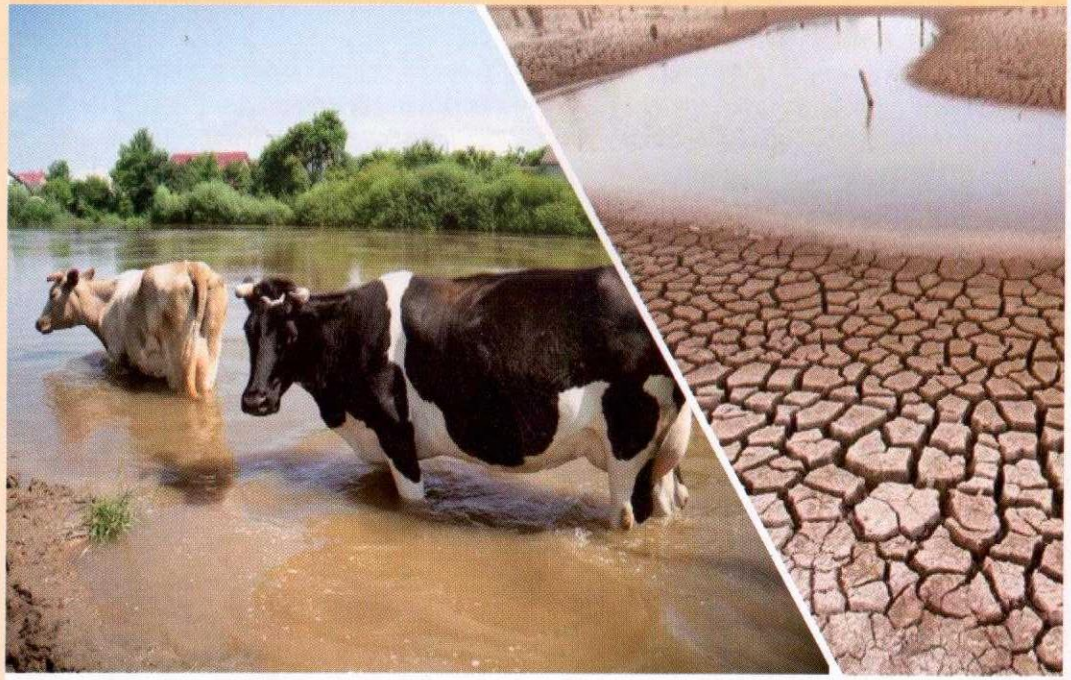

आलेखः

दीप नारायण सिंह, रंजना सिन्हा, सुचित कुमार,

योगेन्द्र सिंह जादौन एवं मनमोहन कुमार

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

सूखे अथवा बाढ़ की स्थिति में पशुओं का प्रबन्धन

सूखे अथवा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में चारे, अनाज आदि की फसल के खेत नष्ट हो जाते हैं। इस विकट परिस्थिति में पशुओं के लिये चारे एवं प्रचलित आहार उपलब्ध नहीं हो पाते अतः इस समय पशुओं के लिये वैकल्पिक आहार व्यवस्था करनी चाहिये। बिहार राज्य का उत्तर–पूर्वी भाग सर्वाधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कोसी, गंडक और महानंदा जैसी प्रमुख नदियों के बार–बार तटबंध टूटने के कारण व्यापक रूप से बाढ़ उत्पन्न करती हैं। परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र की लगभग 76 प्रतिशत से अधिक आबादी प्रतिवर्ष बाढ़ के खतरे से प्रभावित रहती है। बिहार के दक्षिणी और दक्षिण–पश्चिमी भागों में स्थित कई जिले सूखा प्रभावित माने जाते हैं। इन क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा कम होती है तथा सिंचाई की सुविधाएँ सीमित हैं। भूमिगत जल स्तर भी यहाँ अपेक्षाकृत नीचे है, जिसके कारण कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सूखे अथवा बाढ़ के समय गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर जैसे पशुओं और किसानों दोनों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे हालात में अक्सर लोग अपनी सुरक्षा में व्यस्त रहते हैं और मवेशियों की अनदेखी कर देते हैं, जिससे भारी नुकसान होता है। वास्तव में, बाढ़ के समय पशुओं की सुरक्षा उतनी ही जरूरी है जितनी इंसानों की। पशुओं को सुरक्षित ऊँचे स्थान पर ले जाना, सूखा चारा और स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना, रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण करवाना और अस्थायी आश्रय बनाना आवश्यक है। अगर समय रहते उचित कदम उठाए जाएँ तो पशुधन की जान बचाई जा सकती है और किसानों को आर्थिक नुकसान से भी राहत मिलती है।

सूखे / बाढ़ की स्थिति में पशु प्रबंधन

सूखे तथा बाढ़ की स्थिति में चारे और पानी की कमी पशुधन के लिए सबसे बड़ी समस्या होती है। ऐसे समय में उचित प्रबंधन से पशुओं की सेहत और उत्पादकता को बनाये रखा जा सकता है।

- **चारा भंडारणः–** सूखे के समय हरे चारे की कमी होती है, इसलिए सूखा अथवा अकाल से पहले ही चारे का भंडारण करें। वैकल्पिक चारा उपयोग फसल अवशेष जैसे भूसा, मूंगफली की खली, मक्का का ठूंठ आदि का प्रयोग करनी चाहिए।
- **सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरणः–** बाढ़ आने से पहले पशुओं को ऊँचे व सुरक्षित स्थानों पर ले जाएँ। बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में ऊँचे प्लेटफॉर्म या स्कूल भवनों में अस्थायी शेड बनाकर पशुओं को रखें।
- **स्वच्छ पानी की व्यवस्थाः–** शुद्ध व सीमित मात्रा में पानी का उपयोग करें और वर्षा जल संचयन की व्यवस्था करनी चाहिए।
- **खनिज पूरक आहारः–** पोषण की कमी पूरी करने के लिए मिनरल मिक्स व गुड़–भूसा मिश्रण देना चाहिए।
- **छाया एवं आरामः–** पशुओं को तेज धूप से बचाने के लिए छाया या शेड की व्यवस्था करनी चाहिए।
- **रोग नियंत्रणः–** नियमित स्वास्थ्य जांच और टीकाकरण कराएँ ताकि रोगों का प्रकोप से पशु को बचाया जा सके।
- **प्रजनन नियंत्रणः–** अत्यधिक संकट के समय कृत्रिम गर्भाधान रोक दें ताकि ऊर्जा की बचत हो।
- **सरकारी योजनाओं का उपयोगः–** पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे राहत शिविरों और पशु चिकित्सा सेवाओं व चारा वितरण कार्यक्रमों का लाभ लें।

सूखे / बाढ़ के दौरान वैकल्पिक आहार

1. सूखे और बाढ़ जैसी आपदाओं के दौरान जब हरे चारे की कमी हो जाती है, तब पेड़ों की पत्तियाँ पशुओं के लिए एक अत्यंत उपयोगी वैकल्पिक आहार के रूप में उपयोग किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पेड़ों जैसे अरडू, खेजड़ी, बबूल, सुबबूल, पीपल, नीम, गूलर, बरगद, पाकड़ और शहतूत की पत्तियाँ पोषक तत्वों से भरपूर और पशुओं के लिए सुरक्षित होती हैं।
2. इन पत्तियों के साथ–साथ सहजन (मोरिंगा) और खेजड़ी की फलियाँ भी पशुओं के लिए ऊर्जा और प्रोटीन का भी अच्छा स्रोत होती हैं। इनका उपयोग चारे की कमी के समय पशुओं के पोषण स्तर को बनाए रखने में किया जा सकता है।
3. विभिन्न प्रकार की झाड़ियां जैसे बेरी, झरबेरी इत्यादि जो कि रेतीली भूमि में बहुतायत से मिलती हैं एवं इनके लिये पानी की अधिक जरूरत नहीं होती, प्रदेश में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं इनकी कुट्टी बनाकर पशुओं के आहार आवश्यकता को पूर्ण किया जा सकता है।

4. मूंज व कांस जो कि झोपड़ी बनाने एवं खेतों की मेड़ों पर बाड़ बनाने में काम आती हैं इनकी कोमल पत्तियॉ की कुट्टी बनाकर अकालग्रस्त क्षेत्रों में पशुओं को आहार के रूप में दिया जा सकता है। यदि शीरा उपलब्ध हो तो इन्हें शीरे के साथ मिलाकर खिलाना पशुओं के लिए लाभकारी है।
5. गोखरू के पौधे हरी एवं मुलायम अवस्था में अत्यन्त पौष्टिक होते हैं, अतः जिन क्षेत्रों में गोखरू उपलब्ध हो उसे पशुओं को खिलाने हेतु उपयोग में लिया जा सकता है।
6. गन्ने का रस निकालने के बाद बचे अवशेष को काटकर इसकी 4 किलोग्राम तक मात्रा वयस्क पशु को दी जा सकती है। बछड़ों के लिये इसमें शीरा एवं गेंहु का चापड़ मिलाकर उपयोग में लेना चाहिये। वयस्कों के लिये इसे बारीक काटकर इसे यूरिया–शीरे के मिश्रण से उपचारित कर सकते हैं।
7. फलों एवं सब्जियों के उपोत्पाद जैसे सेब की छीलन, संतरों की छीलन, आम की छीलन, आम की गिरी, आदि उर्जा के अच्छे स्रोत हैं। इनमें से कुछ कैल्शियम के